।। ओ३म्।।

कण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

— आर्यसमाज का आठवां नियम

वर्ष ३१, अंक २४ **एक प्रति : २ रुपये**

सोमवार ६ जून, २००८ से १५ जून, २००८ तक

विक्रमी सम्वत् २०६५ दयानन्दाब्द : १८५

सष्टि सम्वत् १६६०८५३१०६ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल: aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-२००६ रोहिणी (दिल्ली) के निर्णयानुसार

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मॉरिशस की घोषणा

4, 5, 6, 7 सितम्बर, 2008 को होगा पोर्ट लुईस में आयोजन

गत आर्य महासम्मेलनों की भांति आर्यजन इसे सफल बनाएं : कै० देवरत्न आर्य

अत्यन्त हर्ष का विषय हे कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्यमहासम्मेलन रोहिणी में जो निर्णय लिए गए, वे लगातार अमल में लाए जा रहे हैं। उनमें से एक महत्वपूर्ण निर्णय यह था कि अगले पांच सालों में भिन्न–भिन्न देशों में आर्य महासम्मेलन आयोजित किए जाएं।इसी आधार पर जुलाई, २००७ में अमेरिका के शिकागो शहर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया। उससे अगले रहा है।

हम सब जानते हैं कि मॉरिशस लघु भारत के रूप में भी जाना जाता है। साथ ही साथ यहां आर्यसमाज का बहुत व्यापक प्रचार–प्रसार एवं कार्य हुआ है। यदि हम यूं कहें कि मॉरिशस एवं भारत की प्रगाढ़ता के बीच एक बड़ा कारण आर्यसमाज है तो अतिश्योक्ति न होगा। आर्यसमाज ने मॉरिशस की उन्नति में बड़ा भारी

योगदान दिया है। इससे पूर्व में ७० के दशक में जब मॉरिशस में आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया था, तब के यात्रियों की यादें आज भी यूं का यूं ताजा हैं। मॉरिशस के लोगों का प्यार, सम्मान एवं आतिथ्य जिस प्रकार से उस समय प्राप्त हुआ था, उसको कोई भी व्यक्ति भूल नहीं सका। आज भी उस महासम्मेलन की यादें मॉरिशस तथा भारत के प्रत्येक भारत पधारे। उन्होंने अपने निमन्त्रण में सभी को आमन्त्रित किया है, विशेषकर भारत के आर्यसमाज। अतएव आओ, अभी से मॉरिशस सम्मेलन की तैयारी में जुट जाएं तथा वैश्वीकरण के इस दौर में आर्यसमाज को एक विश्व की सुदढ़ संस्था के रूप में पहचान बनाने का प्रयास करें।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी एवं मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी ने आर्यजनों से आह्वान किया

वर्ष यानि २००८ में यह मॉरीशस में आयोजित किया जाना था। आर्य सभा मॉरिशस की साधारण सभा ने इसे पारित किया, तदनुरूप ४, ५, ६, ७ सितम्बर की तिथियां घोषित की गई। उनकी ओर से औपचारिक निमन्त्रण सभी देशों और सभाओं को भेजा जा नागरिक पर यूं की यूं अंकित हैं।

रोहिणी के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर मॉरिशस से सैंकड़ो की तादाद में आर्यजन है कि अपनी आर्यसमाज से प्रतिनिधि के रूप में इस सम्मेलन में भाग लेने की तैयारी करें तथा उस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए अपना हर प्रकार का सहयोग देवें। मॉरिशस जाने के लिए एक निश्चित योजना तैयार की जा रही है, जिसे शीघ्र डाक द्वारा तथा आर्यसन्देश द्वारा भेजने का प्रयास होगा। अधिक जानकारी के लिए www.aryasabha.com पर लॉगऑन करें।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-२००८ मॉरिशस

-: मुख्य उद्देश्य :-

वैश्विक विषयों एवं समस्याओं के निदान हेतु आर्यसमाज के छठे नियम का अनुपालन

वैदिक यति मंडल के तत्त्वावधान में वृहद् बैठक आयोजित

आर्यसमाज का भविष्य आर्यसमाज के तपोनिष्ठ संन्यासियों, वानप्रस्थियों, ब्रह्मचारियों पर निर्भर है। यदि आर्यसमाज का साधु वर्ग एक सूत्र में संगठित रहकर आर्यसमाज की रक्षा तथा प्रचार कार्य में अपना योगदान देगा, तभी समाज का भविष्य उज्जवल होगा। इस हेतु **वैदिक यति मंडल की एक अत्यावश्यक महत्वपूर्ण बैठक रविवार 22 जून, 2008 को प्रातः 11.00 बजे से गुरुकुल, 119-गौतम नगर, नई दिल्ली- 110049** में आयोजित की गई है। जिसमें यति मंडल के समस्त संन्यासी, वानप्रस्थी, ब्रह्मचारी एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारियों भाग लेंगे। बैठक में साधु-संन्यासियों को संगठित रखने, देशभर में प्रचार प्रसार की योजना बनाने, तथा नए ब्रह्मचारी, साधु, वानप्रस्थी तैयार करने तथा आर्यसमाज के सम्मुख उपस्थित समस्याओं को ठीक करने हेतु विचार होगा एवं अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के कोर्ट केस की सही वस्तुस्थिति की जानकारी तथा भविष्य की कार्य योजनाओं पर विचार होगा। यति मंडल के समस्त सदस्यों से निवेदन है कि उपरोक्त तिथि को अपने सभी मुख्य कार्यक्रमों को रद्द करके भी समय पर बैठक में पधारकर अपना सहयोग प्रदान करें। आपका सहयोग, सद्भाव ही हमारा सम्बल है। उपस्थित सभी सदस्यों के भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था बैठक स्थल पर की गई है।

-: निवेदक :-

(स्वामी सदानन्द सरस्वती)	**(आचार्य बलदेव नैष्ठिक)**	**(स्वामी शोभानन्द सरस्वती)**
प्रधान, 09417336673	का. प्रधान, 09466254473	मन्त्री
(स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती)	**(आचार्य आर्यनरेश)**	**(स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती)**
संयोजक मन्त्री, 09414038755	09418021091	व्यवस्थापक, 09868855155

महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज के प्रचार प्रसार हेतु

सभा द्वारा तैयार कराई गई वैबसाइट्स

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा विवादों को सुलझाने के साथ-साथ अपने योजनाओं एवं रचनात्मक कार्यों को करने में जुटी है। इसी कड़ी में सभा द्वारा महत्वपूर्ण वैबसाइट्स का निर्माण किया गया है, जो आज के वर्तमान समय में बहुत आवश्यक हैं। उन वैबसाइट्स की संक्षिप्त जानकारी यहां दे रहे हैं।

आर्यजन समय निकालकर इनका अवलोकन करें एवं अपने सुझाव एवं टिप्पणी भेजें।

www.delhisabha.com : दिल्ली सभा, दिल्ली आर्य प्रतितिनिधि सभा की ऑफ़िसियल वेब साईट है, जिस पर आप दिल्ली सभा से सम्बन्धित सभी प्रकार की जानकारियाँ हासिल कर सकतें हैं। वेदवाणी, विभिन्न कार्यक्रमों के फोटोग्राफ, चिकित्सालयों व विद्यालयों के नाम, विवाह सम्बन्धित जानकारी, विभिन्न प्रकार की ऐक्टिविटिज़ आदि की जानकारी भी प्राप्त कर सकतें हैं। आप इस वैब साईट से ऑन लाईन आर्य संदेश व वेद भी पढ़ सकतें हैं तथा आर्य संदेश के पिछले अंकों को भी प्राप्त (डाउनलोड) कर सकतें हैं। ऑन लाईन शॉपिंग व डोनेशन की भी सुविधा भी अतिशीघ्र शुरू हो जायेगी।

www.aryasabha.com : आर्य सभा, सम्पूर्ण विश्व के आर्य समाजों के सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की एक ऑफिसियल वैब साईट है, जिस पर भारत व विश्व में होने वाली गतिविधियों को देख व पढ़ सकते हैं। इस वेब साईट पर आर्य महा सम्मेलनों के प्रमुख फोटोग्राफ उपलब्ध हैं तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ-साथ प्रान्तीय सभाओं के प्रधान व मंत्री के नामों की सूची व उनके सम्पर्क नम्बर को भी देख सकतें हैं।

— शेष पष्ठ ८ पर

आर्यसमाज के नियमों की व्याख्या

दूसरा नियम

।। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, ...।।

— प्रो० रत्नसिंह

गतांक से आगे :-

जिज्ञासु पूछता है कि ऐसे महान् ईश्वर का जन्म कब हुआ था? उत्तर में महर्षि कहते हैं कि ईश्वर का जन्म कभी नहीं होता, वह तो अजन्मा है। जिसका जन्म नहीं उसका अंत भी नहीं। इसी नियम से ईश्वर अनंत है। जिन पदार्थों का जन्म होता है उनका अंत भी अवश्यमभावी है :— जैसे मनुष्य — देहवत् विकार अवश्य उत्पन्न होंगे। इसके विपरीत, चूंकि ईश्वर अजन्मा व अनंत है, इसलिए वह निर्विकार है, चूंकि वह अजन्मा और अनंत है, इसलिए वह अनादि भी है। यह सब-कुछ सुनकर जिज्ञासु कहता है कि — हे महर्षि मेरी समझ में यह सब कुछ नहीं आता। आप मुझ पर दया करके कुछ उपमाओं के सहारे उस ईश्वर का स्वरूप समझाइए। इस पर महर्षि कहते हैं कि वह ईश्वर तो अनुपम है। भौतिक उपमाओं से अभौतिक ईश्वर को नहीं समझाया जा सकता है। जिज्ञासु पूछता है कि अच्छा यह तो बतलाइए कि उस ईश्वर से मेरा कोई सम्बन्ध है या नहीं? इस पर महर्षि कहते हैं कि तुझसे ही नहीं वरन् समस्त जगत् से उसका सम्बन्ध है। वह सर्वाधार व सर्वेश्वर है। वह सर्वाधार व सर्वेश्वर है, इसलिए यह सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी भी है। यहां जिज्ञासु को यह शंका होती है कि जो ईश्वर सर्वाधार है, वह सारे जगत् की रचना व धारण करते-करते जीर्ण हो जाता होगा। इस शंका के निवारण में महर्षि कहते हैं कि वह ईश्वर अजर व अमर है, चूंकि वह न बूढ़ा होता और न कभी मरता है, इसलिए उसे कोई भय नहीं, अतः वह अभय है। अजर, अमर, अभय होने का फल है, उसका नित्य व पवित्र होना। जिज्ञासु पूछता है कि वह ईश्वर क्या करता है? उत्तर में कहा गया कि वह सष्टिकर्त्ता हैं जिज्ञासु ने जब ईश्वर का स्वरूप समझ लिया तो महर्षि ने उसको उसके कर्त्तव्य की ओर संकेत दिया कि तू उसी ईश्वर की उपासना किया कर और किसी की नहीं।

इस नियम के आधार-वेद-मंत्र

सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर ँशुद्धम पापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भू र्याथातथ्यतोर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।। — यजुः ०४. मं० ८

अर्थ — परमात्मा सर्वव्यापक, शीघ्रकारी और अनंत बलवान् शुद्ध, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, सर्वोपरि विराजमान सनातन, स्वयं सिद्ध, जीव को अपनी सनातन विद्या से यथावत् अर्थों का बोध वेद द्वारा कराता है। वह अजन्मा, निराकार, शुद्ध और पवित्र है।

यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्य। स पवस्व सहस्रजित्।।

— ऋ. ६/५५/४

अर्थ — जो परमेश्वर सबको जीतता है, आप नहीं जीता जाता, सर्वथा सर्वदा निर्भय, शत्रुनाशक है, वह असंख्यों का जीतने वाला हमें पवित्र एवं सुरक्षित करे। इससे ईश्वर का अभय होना सिद्ध है।

वेदाहमेतं पुरूषं महान्तमादित्यवर्ण तमसः परस्तात्। तमेव विदित्यवातिमत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेयनाय।। — यजुः ३१/१८

अर्थ — वह परमेश्वर सबसे बड़ा, सबका प्रकाश करने वाला और अविद्या-अंधकार, अर्थात् अज्ञान आदि दोषों से अलग हैं। उसी की उपासना सबको करनी उचित है। उससे भिन्न की नहीं।

क्रमशः

आर्यसमाज के नियम व्याख्या

श्री हनुमान जी बन्दर नहीं थे, वानर क्षत्रिय वंश के आर्य मानव थे

जब हनुमान जी ब्रह्मचारी के रूप में सुग्रीव के दूत बनकर श्री रामचन्द्र जी से बात करने आये और बात रामायण ही सर्वाधिक प्रामाणिक ग्रन्थ है। वह उनके समकालीन महर्षि वाल्मीकि की रचना होने से ऐतिहासिक ***परिनिष्टता।।***

यदेशः साध्विति व्रयात्कार्य तन्युक्तं संशमय। नाहि तारामत किचिदन्यथा गुत्थियों को सुलझाकर राज्य को व्यवस्थित बनाने के कार्य में अत्यन्त कुशल है। जिस कार्य में अनुमति दे

करके वापस गये तो श्री रामचन्द्र जी ने श्री लक्ष्मण जी से कहा कि हे लक्ष्मण– हनुमान जी सुग्रीव के मंत्री हैं जिस व्यक्ति ने ऋग्वेद को नहीं पढ़ा, जिसने यजुर्वेद को धारण नहीं किया, जो सामवेद का पण्डित नहीं है वह व्यक्ति जैसी वाणी श्री हनुमान जी ने बोली, वैसी नहीं बोल सकता, इन्होंने निश्चय ही सम्पूर्ण व्याकरण पढ़ा है। (वाल्मीकि रामायण किष्किंधा काण्ड सर्ग–३) इसके अतिरिक्त महर्षि अगस्त्य ने राम से कहा पराक्रम, उत्साह, बुद्धिप्रताप, सुशीलता, नम्रता, न्याय-अन्याय का ज्ञान, गम्भीरता, चतुरता, बल और धैर्य में हनुमान जी के समान लोक में कोई मनुष्य नहीं है।

हनुमान जी ने सूत्र, वत्ति, बातिक, भाष्य, साधन और संग्रह सहित सब पढ़ा है। व्याकरण के अतिरिक्त अन्य शास्त्रों (वेदांगो) छन्द आदि में भी वे अद्वितीय विद्वान है। महावीर हनुमान जी के पिता का नाम केसरी तथा माता का नाम अंजनी देवी था। वे वानर क्षत्रियवंश के आर्य मानव थे, आर्यों के वंशज थे।

इस प्रकार सिद्ध है कि हनुमान जी मनुष्य थे, क्षत्रिय जाति के रत्न थे, भारतीयों के गौरवमय पूर्वज थे। उनके बारे में जो भी भ्रम देश में पैदाकर दिये गये हैं उनका निवारण हो जाना चाहिए।

हनुमान जी के विषय में वाल्मीकि दृष्टि से माननीय है। तुलसीकत रामायण अकबर के राज्य में अब से लगभग ३०० वर्ष पहले की रचना होने से ऐतिहासिक महत्व की पुस्तक नहीं है। श्री लक्ष्मण जी ने भी श्री हनुमान जी को 'हे बन्दर' कहकर सम्बोधित नहीं किया, वरन हे विद्वान– ***विदिता नौ गुणा विद्वान सुग्रीवस्य महात्मनः तमेव चावा मागर्वाः सुग्रीव प्लेवगेश्रम।***

हे विद्वन, हम लोगों को महात्मा सुग्रीव के सब गुण विदित हैं हम दोनों उन्हीं सुग्रीव को ढूंढ़ते फिरते हैं। अतः जब हम बालह्मचारी श्री हनुमान जी को याद करें, उनकी पूजा करें तो हमारे सामने वही तस्वीर होनी चाहिए जो भगवान श्री रामचन्द्र जी, श्री लक्ष्मण जी महर्षि अगस्त ने वर्णन की न कि पूंछ वाले बन्दर की। वानर जाति के क्षत्रिय यज्ञोपवीत धारण करते थे वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धा काण्ड सर्ग–२५ में लिखा है– ***ततोग्नि विधि वद्दत्वासोप सव्यंचकारह।***

अंगद ने बाली के शव को विधिवत अग्नि देकर अपना यज्ञोपवीत दाहिने कंधे पर रख लिया। बन्दर पशु यज्ञोपवीत नहीं पहन सकते।

वानर जाति मनुष्यों की क्षत्रिय वंश की दक्षिणीय शाखा थी। उनकी स्त्रियां बंदरियां नहीं होती थी, तारा के विषय में राम ने सुग्रीव से कहा है– ***सुषेण दुहिता चेयम अर्थ सूक्ष्म विनश्चये। औत्यातिके च विविधे सर्वतः परिवर्तते।।***

हे सुग्रीव ! सुषेण की पुत्री तारा तुम्हारे सामने बैठी है–यह अत्यन्त सूक्ष्म और पेचीदे राजकीय प्रश्नों का निर्णय करने में तथा अनेक राजनैतिक उसे अवश्य करिये, उसमें कभी असफलता नहीं मिलेगी। इससे भी सिद्ध है कि वह बंदरिया नहीं थी।

– अखिल जैतली
मंत्री, आर्यसमाज, कालपी, (जालौन

आर्यसन्देश विशेषांक हेतु विज्ञापन की अपील

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अपने इतिहास में विभिन्न अवसरों पर आर्यसन्देश के विशेषांक प्रकाशित करती रही है। इन विशेषांकों में अनेक वैदिक विद्वानों एवं संन्यासीवृन्दों के संग्रहणीय लेख प्रकाशित होते हैं। ये विशेषांक अनुपम एवं साहित्यिक संग्रह की दृष्टि से उल्लेखनीय होते हैं।

महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन के 125 वर्ष पूर्ण होने के उलक्ष्य में सभा ने साप्ताहिक आर्यसन्देश का विशेषांक प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। विशेषांक का आकार 23×36"/8 होगा। विज्ञापन साईज 7-1/2×10" पूरा पृष्ठ एवं 7-1/2×5" आधे पृष्ठ का होगा। आपसे निवेदन है कि आप अपनी व्यवसायिक संस्था अथवा आर्य संस्था का विज्ञापन देकर साहयोग करें। आप अपना क्रास चैक/ड्राफ्ट **"आर्यसन्देश"** के नाम सभा कार्यालय के पते पर भिजवाकर कृतार्थ करें। विज्ञापन सामग्री एवं डिजाइन हमें **22 जून, 08** तक अवश्य ही भिजवा देवें। विज्ञापन दरें निम्नलिखित हैं :-

1.	पूरा पृष्ठ	4000/- रु. (श्याम-श्वेत)
2.	पूरा पृष्ठ	7500/- रु. (रंगीन)
3.	आधा पृष्ठ	2500/- रु. (श्याम-श्वेत)
4.	आधा पृष्ठ	4000/- रु. (रंगीन)
5.	मुख्य पृष्ठ (अन्दर)	25000/- रु. (रंगीन)
6.	अन्तिम पृष्ठ (अन्दर)	25000/- रु. (रंगीन)
7.	अन्तिम पृष्ठ	50000/- रु. (रंगीन)

आशा है आर्य सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में सहयोग हेतु आपका विज्ञापन हमें अवश्य ही प्राप्त होगा।

-: निवेदक :-

(ब्र. राजसिंह आर्य)	**(विनय आर्य)**	**(सुशील महाजन)**
प्रधान सम्पादक	सम्पादक एवं महामन्त्री	व्यवस्थापक
9350077858	9350204466	9312667702

वाणी और लेखन में मधुरता : शालीनता और संयम

— डॉ० सुन्दर लाल कथूरिया

वाणी मनुष्य के शरीर का बहुत महत्वपूर्ण अंग है। पशुओं से यह अंग मनुष्य को अलग करता है। सुसंस्कत वाणी मनुष्य की विशेषता है – यही मनुष्य को पुशओं से अलग करती है। सुसंस्कत, संयत, शालीन और मधुर वाणी ही मनुष्य का सबसे बड़ा आभूषण है, सबसे बड़ा अलंकार है। मनुष्य जो सोचता है, वही लिखता है। अपने इस रूप में वस्तुतः लेखन वाणी का ही एक रूप है – मौन वाणी और आम्न चिन्तन से अलग नहीं है। चूंकि लेखन वाणी का ही मौन रूप है, अतः इसमें भी माधुर्य, शालीनता, सावधानी और संयम की अपेक्षा है, अवाक् वाणी से भी अधिक। कारण यह है कि लेखन का प्रमाण कथित वाणी से भी अधिक सुदढ़ और अमिट है – अक्षरं परमम् ब्रह्म। यों भी संस्कत में एक उक्ति है – 'शतम् वद एकम् मा लिख' अर्थात् सौ बार बोलो पर एक बार भी लिखो नहीं। वस्तुतः वाचिक शब्द भी कभी नष्ट नहीं होते, फिर लिखित शब्दों के तो कहने का ही क्या ! अतः वाणी के दोनों ही रूपों में – वाचिक और मौन (लिखित) रूप में मधुरता, शालीनता, संयम और सावधानी आवश्यक है, इसलिए वैदिक संध्या के इन्द्रिय स्पर्श मन्त्रों में सबसे पहले 'ओं वाक् वाक्' आता है। हम में है। इसी से वाणी पवित्र होती है। व्यक्ति को हमेशा मितभाषी, हितभाषी और ऋतभाषी होना चाहिए अर्थात् व्यक्ति कम बोले, कल्याणकारक बात कहे और सत्य ओले। अधिक बड़–बड़ करना और झूठ बोलना ठीक नहीं है। वेद के अन्य मन्त्रों में मधुर एवं सत्यनिष्ठ वाणी के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। सुसंस्कत वाणी का ही विशेष महत्व है – 'वाण्येका समलंकरोति पुरुषम् या संस्कता धार्यते। क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततम् वाग्भूषणम् भूषणम्।' बोलते या लिखते समय व्यक्ति को शालीन एवं संयत होना चाहिए। एक–एक शब्द सोच–समझकर, तोल–तोलकर बोलना या लिखना चाहिए।

हितकर और मनोहारी वाणी दुर्लभ है। पर वही श्रेयस्कर है। धर्मग्रन्थों में तो सुसंयत, सुसंस्कत, सुमधुर, हितकर, सत्यनिष्ठ वाणी के महत्व पर प्रकाश डाला ही गया है। संस्कत–हिन्दी एवं अन्य भाषाओं के कवियों ने भी शहद के समान मीठी (मधुवेष्टित) वाणी का गुणगान किया है। 'मधुरं में वाचा' एवं 'मधुपर्क' शब्द के द्वारा भी मधुर व्यवहार का महत्व रेखांकित ध्वनित है। हिन्दी के अनेक दोहों में शालीन एवं मधुर भाषा के प्रयोग पर उदाहरणों से बल में महाभारत को देखा जा सकता है। असंयत वाणी की हानियों पर विचार करते हुए हमें सदैव इससे बचना चाहिए।

आम जनता ही नहीं, राजनेता और आर्यजन–आर्यनेता एवं कुछ पत्र–पत्रिकाओं के सम्पादक भी असंयत एवं अश्लील भाषा का प्रयोग करते देखे गए हैं। राजनेताओं, आर्यजनों, आर्यनेताओं, धर्माचार्यों, सम्पादकों आदि का चरित्र आम जनता के लिए आदर्श होना चाहिए। उनका चरित्र, आचरण और भाषा जनसामान्य के लिए आदर्श एवं अनुकरणीय होती है। अतः बोलते या लिखते समय उन्हें मानक, आदर्श, सुसंयत एवं सुमधुर भाषा का प्रयोग करना चाहिए। एक ही बात को कई प्रकार से कहा या लिखा जा सकता है – कर्कश रूप से या सुमधुर रूप से। भाषिक स्खलन अच्छी बात नहीं है। इधर राजनेताओं–आर्यनेताओं में चलने वाले वाग्युद्धों में इस प्रकार के भाषिक स्खलन बहुतायत में देखे जा रहे हैं। यह काम्य नहीं है। आर्ष वैदिक पत्रिकाओं में आर्यनेता/पत्र–पत्रिकाओं के सम्पादक एक–दूसरे पर कीचड़ उछाल रहे हैं, जिस प्रकार की छींटाकशी कर रहे हैं, जिस प्रकार की अशालीन, असंयत एवं अशिष्ट भाषा का प्रयोग कर रहे हैं, निःसन्देह वह लज्जास्पद है। वेदों के मर्म को जानने वाले वैदिक विद्वानों को अपशब्दों से बचते हुए शिष्ट शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। पवित्र वाणी एवं शिष्ट सुमधुर भाषा का निश्चय ही बहुत महत्व है और इसमें कोई मोल भी नहीं लगता। अन्त में यह कहना अनुचित न होगा कि झूठ बोलने या अशिष्ट, आशालीन और कर्कश वाणी के प्रयोग के बजाय मौन रह जाना ही अधिक अच्छा है। सुमधुर वाणी के प्रयोग से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। प्रभु हमें शक्ति दे कि 'ओं वाक् वाक्' के रहस्य को समझकर हम उस पर आचरण कर सकें।

— प्रधान, आर्यसमाज बी-ब्लाक,
जनकपुरी, नई दिल्ली-५८

ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय - प्रथम पादः (36)

— डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'

सब आर्य जन प्रातः—सायं संध्या में 'ओं वाक्वाक्' का जाप करते हैं, किन्तु इतनी आयु के बीत जाने पर भी हमें वाणी के संयम का अभ्यास नहीं हुआ, जबकि यह मन्त्र हमें वाणी की पवित्रता, संयम और मधुरता की शिक्षा देता है।

असंयत या कर्कश वाणी, असावधानी पूर्वक उच्चरित वाक्य, असंवैधानिक भाषा या अपशब्दों का प्रयोग, असत्य कथन, अन्यों को लांछित करने वाली वाणी आदि वाणी के दोष हैं। वाणी संयत, समधुर, हितकारी एवं ऐसी हो कि उससे सुनने वाले को पीड़ा या चोट न पहुंचे। वाणी की सार्थकता प्रभु—नाम (ओ३म्) के सम्रणों दिया गया है। ऐसे दोहों में एक अत्यधिक प्रसिद्ध दोहा है — ***"कौआ कासे लेत है, कोयल काको देत। केवल मीठे बोल ते, मन सबको हर लेत।।'***

एक और दोहे में निरभिमान कथनों एवं मन को ठण्डक पहुंचाने वाली भाषा के प्रयोग की बात कही गई है —

"ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय, औरन को सीतल करे, आपहुं सीतल होय।।"

पवित्र और मीठी वाणी ईश्वर का अप्रतिम वरदान है। पुराणेतिहास इस बात के साक्षी हैं कि कर्कश और असंयत वाणी से बड़े—बड़े युद्ध हो गए। हमारे इस कथन के प्रमाण रूप

बोध कथा

जैसा दष्टिकोण, वैसा अन्तःकरण

— महात्मा आनन्द स्वामी

वीरान जंगल में एक सुन्दर मकान था। एक साधु ने उसे देखकर सोचा — ***'कितना सुन्दर स्थान है यह ! यहां बैठकर ईश्वर का ध्यान करूंगा।'***

एक चोर ने उसे देखा तो सोचा — ***'वाह ! यह तो सुन्दर स्थान है ! चोरी का माल लाकर यहां रखा करूंगा।'***

एक दुराचारी ने देखा तो सोचा — ***'यह तो अत्यन्त एकान्त स्थान है! दुराचार करने के लिए इससे उत्तम स्थान और कहां मिलेगा?'***

एक जुआरी ने देखकर सोचा — ***'अपने साथियों को यहां लाऊंगा, यहां बैठकर हम जुआ खलेंगे।'***

अलग-अलग दष्टिकोण होने के कारण एक ही मकान को प्रत्येक व्यक्ति ने अलग-अलग रूप में देखा। जैसा दष्टिकोण बनाओगे, वैसा अन्तःकरण बनेगा अवश्य। यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारा अन्तःकरण अच्छा हो तो दष्टिकोण अच्छा बनाओ।

सब जग ईश्वर-रूप है, भलो बुरो नहिं कोय। जैसी जाकि भावना, तैसा ही फल होय।। ❑

उपपद्यते चाप्युपलभ्यते च।।३६।।

अर्थ — (उपपद्यते) युक्ति प्रमाण से सिद्ध होता है (च) और (अपि) भी (उपलभ्यते) शास्त्रों में भी ऐसा ही मिलता है (च) भी। अर्थात् युक्ति आदि के द्वारा भी कर्म का अनादि होना सिद्ध होता है।

भावार्थ — जीवात्मा स्वरूप से अनादि है। इसे सभी स्वीकार करते हैं। युक्ति और प्रमाणों से भी आत्मा के कर्म और उसका कार्यक्षेत्र यह संसार भी अनादि सिद्ध होता है। यदि वर्तमान जगत् की रचना से पहले कभी ऐसा संसार न बना होता तो इस संसार की विषम रचना और प्राणियों के भिन्न-भिन्न प्रकार के सुख-दुःख आदि का होना बिना कारण के मानना होगा जो एकदम असंगत है। यह पहले ही कहा जा चुका है कि ईश्वर इस विषमता का कारण नहीं है। किसी कार्य का बिना कारण होना मान लेने पर कार्य करण व्यवस्था और इस पर आश्रित सभी व्यवहार नष्ट हो जाएंगे। आत्मा का विभिन्न शरीरों के साथ सम्बन्ध बिना कर्मों का माना जाना आवश्यक है।

इसका अभिप्राय यह है कि जीव और कर्म अनादि हैं। यह युक्तियों और शास्त्रों से सिद्ध होता है। इस संसार में जीवों की असंख्य योनियाँ है। इसका कोई कारण अवश्य होगा। क्योंकि बिना कारण के कार्य नहीं होता। जब हमें फल दिखाई देते हैं तो उससे पूर्व कर्मों की कल्पना होती है और बिना कर्मों के फल हों यह संभव नहीं। सष्टि के आरम्भ में जीवों को जो योनियां प्राप्त हुई हैं वे उन कर्मों के कारण है जो जीवों ने इससे पूर्व सष्टि में किये थे। क्योंकि यदि यह न माने तो जीवों का विभिन्न योनियों में जाने का कोई कारण नहीं माना जा सकता। फल प्राप्त होने से पूर्व कर्मों के अस्तित्व को स्वीकार करना होगा। सष्टि प्रवाह से अनादि है और यह क्रम अनादि काल से चला आ रहा है। जब भी सष्टि होगी और जीवों को भिन्न-भिन्न योनियां प्राप्त होंगी, वे जीवों के पूर्व किये हुए कर्मों के आधार पर ही होंगी। इस प्रकार जीवों और उनके कर्मों का अनादि होना स्वयं सिद्ध है। कठोपनिषद् (१.२.१६) में कहा है — **''अजो नित्यः शाश्वतोयं पुराणों न हन्यते हन्यमाने शरीरं।''**

यह जीवात्मा, नित्य, सदा रहने वाला और पुरातन है। शरीर के मरने/नष्ट होने पर भी इसकी मत्यु/नाश नहीं होता। जब जीव अनादि है तो उसके गुण, कर्म, स्वभाव भी अनादि होंगे, यह मानना होगा।

— जगत् की रचना में अपेक्षित कारणों की संगति से ही इस जगत् की उत्पत्ति होती है। इनका विवरण देने के बाद सूत्रकार अगले सूत्र में इस पाद का उपसंहार करते हैं।

— सी-२ए/६० जनकपुरी, नई दिल्ली-५८

❑

Question & Answer

Eternal Knowledge of Vedas

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q. : After death what happens to human being and is there any punarjanam? **Venkatesh Rao**

Ans. : Yes, after death, punarjanam takes place based on previous/present lives' deeds, i.e., sanchit deeds.

Q. : Many people take the name of vedas but do not attain the vedas rule. If we suggest that God is every where why you are going to mandir, they answered how you are going to office like that mandir is an office of God if you want to meet just go to God's office mandir!!! And people believe them? If you tell some thing about NA TASYA PRATIMA ASTI they geot wild. What to say? **Anonymous**

Ans. : Vedas tell that God is formless, omnipresent, omniscient, Almighty who creates, nurses and destroys the universe. Vedas state that God is every where. On this true point Shri Gurubani states: "Koi Na Jaane Tera Keta Kevad Cheera", i.e., Oh God! no body knows about your Karmas etc and how big is your darbaar. In this connection I remember a story of a wounded parrot who was struck by a hunter. The parrot fell in the lap of a saint in a jungle. The saint cured the baby parrot, keeping it in a cage.

Where the saint taught it some words, so that the parrot could be cautious from the hunter saying."O hunter! I now have understood your trick to hunt I shall never fell into your trap". The saint preached the said words so that the parrot may save himself from hunter's trap. When the parrot become allright, the saint released him in the sky. The parrot flew freely and joined his group. The parrot had become habitual to recite the preachings both the times, in itss group. The newly born babies of parrots, listend & become habitual to recite, "O hunter! I now have understood your trick to hunt and I shall never fall into your trap." Soon hundreds of parrots became habitual to recite the same both the times.

Once a hunter entered the jungle along with his trap, to catch the birds/ parrots. He listened to the recitation of the parrots. The hunter thought that the parrots are so learned that they have identified me as hunter and they shall never fall into my trap. He became nervous and started return

योगः कर्मसु कौशलम्

- डॉ० अजय कुमार पाठकः

गतांक से आगे :-

अगर्भश्च सगर्भश्च प्राणायामो द्विधास्मतः। जपं ध्यानं विना गर्भः सगर्भस्तत्समप्वयात्।।३३।।
अगर्भाद् गर्भसंयुक्तः प्राणायामः शताधिकः। तस्मात्सगर्भं कुर्वन्ति योगिनः प्राणसंयमम्।।३४।।

तैत्तिरीयोपनिषदि पचकोशाः वर्णिताः सन्ति। ते च अन्नमय–प्राणमय– मनोमय–विज्ञानमय–आनन्दमय–कोशाः। एतेषु पचकोशेषु प्राणमयकोशः एव सर्वप्रधानः। प्राणतत्त्वम् उप जीवानां शक्तिः अस्याः संचारः सूर्य एव करोति। शतपथब्राह्मणे उक्तं यद् सर्वेषां जीवधारिणां प्राणाः सूर्य एवं अस्ति –

विश्वरूपं हरिणं जातवेदसं पारायणः ज्योतिरेकं तपत्नम्।
सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः प्राणाः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः।।

प्राणायामे श्वासप्रश्वासक्रियया अस्माकं फुफ्फुसौ बलवन्तौ भवतः। परिणामतः हृदयमपि स्वस्थं यति। वक्षोदरप्रदेशौ अपि शक्तियुतौ भवतः। शरीरे रूधिरे परिसंचरणप्रक्रिया (Circulation of Blood) सुष्ठुरीत्या प्रचलति। तस्मिन् प्राणवायोः अद्भुतसंचारः विषवाष्पस्य (Co2) विरेचनं च भवति। अस्माकं शरीरांगे विजातीयतत्त्वानां अवसादनम् अपि प्राणायामेन न संभवति। अतः वयं रोगमुक्ताः भवेम। प्राणशक्तेः रक्षणार्थं प्राणायाम एव सम्यक् उपचारः। अतएव नीतिशास्त्रेपि उचितं एव कथितम् – **धर्मार्थकाममोक्षाणां प्राणाः संस्थितिहेतवः। तन्निघ्नता किं हतं रक्षिता किं न रक्षितम्।।** योगस्य प्रभावात् मानवः शिवसदशः भवति इति लिंगपुराणे वर्णितम् –

कीटो भ्रमरयोगेन भ्रमरो भवति ध्रुवम्। मानवः शिवयोगेन शिवो भवति केवलम्।।

– २३, नागवंशी लाल लेन, गोल बगीचा, गया,
पो. आर. एस०, गया - ८२३००२ (बिहार)

सरल सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन की १२५ वीं वर्षगांठ पर आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर लगभग सभी वक्ताओं ने कहा कि प्रत्येक भारतीय को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना चाहिए। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमने वैदिक विद्वान श्री सत्यकाम वर्मा जी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश सन्देश से जो अत्यन्त सरल भाषा में लिखी गई है एक-एक समुल्लास आर्य संदेश में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। आशा है इसे पढ़कर प्रत्येक भारतीय प्रेरणा लेगा और अन्यों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि वे एक-एक समुल्लास के प्रकाशन पर पत्रक के माध्यम से इसका प्रचार-प्रसार करे जिससे सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश घर-घर में जाए और इसकी सुगन्धि चहुं ओर फैले। - सम्पादक

journy. When he was passing through the jungle, the hunter met with the saint who had preached the lesson to the wounded parrot. The saint saw the worried hunter and asked about his problem. The hunter told whatever he has listened from the parrots and told the saint that he used to come there, once in a year to catch the parrots/birds to sell in the market was by source of livelihood. The parrots have become learned, they would not fall into his trap world will adversely effect his financial condition. After listening the story of the hunter the saint thought that he must take the examination of parrots whether they have really become learned about the trap of the hunter. He asked the hunter to follow him. Both reached the place of parrots where the recitation continued. The saint then asked the hunter to lay his trap, without paying any attention to the recitation of the parrots. The hunter laid his trap and placed the grains as bait for the birds, he then returned to his hidden place. The saint and hunter the saw that every parrot was reciting the lesson- that they had learnt; but surprisingly were also being entrapped simultaneously, in the trap. The saint also saw the parrot whom he had taught. The story concludes that though parrots learnt the preachings by heart, word by word; yet they and not know the meaning of any word that was about trap and hunter. So is case of preachings of those who simply learn the spiritual lesson from the holy books by heart but are entangled in illusion. Because like parrot probably they do not know what is God ? What is illusion? What is kaam, krodh, ahankaar, What are Vedas etc etc. Mostly they are indulged in a mission to gather the money to enjoy. God has held sun, moon, air, earth, souls i.e., every smallest as well as biggest matter of the universe. God does not simply say that I behold the universe but really He beholds the universe. Ancient/present Rishis really studied Vedas and held the knowledge thereof in life applying it in action as well. For example— Valmiki jee as well as Tulsi state that Sri Ram was a learned of Vedas and Ashtang Yoga philosophy. Sri Ram also followed the preachings of Vedas. He performed several Yajyen, did hard Ashtang Yoga, practice, obeyed the parents, was always in touch with truth, did services to Rishi-munis and saved the public as a king too. So is the case of Yogeshwer Shri Krishna, Raja Harishchandra, Raja Janak etc., Vyasmuni, Guru Vashisth, Vishwamitra, Kapil muni and several Rishi-Munis also followed the same path. Now it is surprising that most of the saints have become professional only.

To be continued...

वर चाहिए

शुद्ध शाकाहारी, वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत, आर्य कन्या, कद 5 फुट 2 इंच, रंग गोरा, 22 वर्षीय पोस्ट ग्रेज्युण्ट अग्रवाल के लिए योग्य सेवारत/व्यवसायी आर्य वर की आवश्यकता है। इच्छुक आर्य परिवार निम्न पते पर सम्पर्क करें :-

मन्त्री, आर्यसमाज कैराना,
जिला मुज्जफरनगर (उ0प्र0)
दूरभाष : 09837773024

सत्यार्थ प्रकाश : अनुभूमिका - ३

जो यह बाइबल का मत है वह केवल ईसाईयों का है सो नहीं किन्तु इससे यहूदी आदि भी गहीत होते हैं जो यहां तेरहवें समुल्लास में ईसाई मत के विषय में लिखा है इसका यही अभिप्राय है कि आजकल बाइबल के मत के ईसाई मुख्य हो रहे हैं और यहूदी आदि गौण हैं, मुख्य के ग्रहण से गौण का ग्रहण हो जाता है, इससे यहूदियों का भी ग्रहण समझ लीजिए, इनका जो विषय यहां लिखा है सो केवल बाइबल में से कि जिसको ईसाई और यहूदी आदि सब मानते हैं और इसी पुस्तक को अपने धर्म का मूल कारण समझते हैं।......बाइबल के भाषान्तर बहुत से हुए हैं जो कि ईसाइयों के मत में बड़े-बड़े पादरी हैं उन्होंने किये हैं उनमें से देवनागरी सा संस्कत भाषान्तर देखकर मुझको बाइबल में बहुत सी शंका हुए हैं उनमें से कुछ थोड़ी सी इस तेरहवें समुल्लास में सबके विचारार्थ लिखी है, इस लेख में केवल सत्य की वद्धि और असत्य के ह्रास होने के लिए है न कि किसी को दुःख देते वा हानि करने अथवा मिथ्या दोष लगाने के अर्थ।....इस लेख से यही प्रयोजन है कि सब मनुष्यमात्र को देखना सुनना लिखना आदि करना सहज होगा और पक्षी प्रतिपक्षी होके विचार कर ईसाई मत का आन्दोलन सब कोई कर सकेंगे, इससे एक यह प्रयोजन सिद्ध होगा कि मनुष्यों को धर्मविषयक ज्ञान बढ़कर यथायोग्य सत्यासत्य मत और कर्तव्याकर्तव्य कर्म सम्बन्धी विषय विदित होकर सत्य और कर्तव्यकर्म का स्वीकार असत्य और कर्तव्यकर्म का परित्याग करना सहजता से ही सकेगा। सब मनुष्यों को उचित है कि सबके मतविषयक पुस्तकों को देख समझकर कुछ सम्मति व असम्मति देवें वा लिखें नहीं तो सुना करें' क्योंकि जैसे पढ़ने से पण्डित होता है वैसे सुनने बहुश्रुत होता है।.. ...मनुष्य का आत्मा यथायोग्य सत्यासत्य के निर्णय करने का सामर्थ्य रखता है जितना अपना पठित वा श्रुत है उतना निश्चय कर सकता है, यदि एक मत वाले दूसरे मतवाले के विषयों को जाने और अन्य न जाने तो यथावत् संवाद नहीं हो सकता किन्तु अज्ञानी किसी भ्रमवश बाड़े में घिर जाते हैं, ऐसा न हो इसलिए इस ग्रन्थ में प्रचलित सब मतों का विषय थोड़ा-थोड़ा लिखा है।

–: साभार :–
सत्यार्थ प्रकाश सन्देश

"ओ३म्" साम्प्रदायिक नहीं है

– खुशहाल चन्द्र आर्य

यह तो पूरा विश्व मानता है कि वेद संसार के सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं। ईश्वर ने जब सष्टि की रचना की तभी चारों वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अर्थवेद हैं, जो क्रमशः ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान के ग्रन्थ हैं और चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य, व अंगिरा थे क्रमशः उनके मुखोंसे चारों वेद उच्चारित करवाए। इसीलिए वेद ईश्वरीय ज्ञान कहलाता है। ईश्वर ने यह सारी सष्टि मनुष्य के लिए बनाई है कारण मनुष्य उसकी सर्वोत्तम सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरि व अन्तिम कति है। इसीलिए मनुष्य को अन्य योनियों की वनिस्पत बुद्धि विशेष दी है। अन्या योनियां जैसे पशु–पक्षी, कीट–पतंग सिर्फ भोग योनियां है। इनको सिर्फ पूर्व जन्म के कर्मो को भोगने के लिए ही जन्म मिलता है, इनके किए स्वाभाविक (जो ईश्वर प्रदत्त हैं) कर्मो का उन्हें कोई फल नहीं मिलता। मनुष्य कर्म और भोग दोनों योनि है परन्तु यह कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतन्त्र है इसीलिए इसको नैमित्तिक (जो किसी के सीखाने से सीख जाता है) किए कर्मो का फल मिलता है और इसी योनि में जीव मोक्ष को प्राप्त कर सकता है, जो चाहिए। यह नाम पूर्ण वैज्ञानिक है। इसके नाम की ध्वनी नाभि से उठती है और कंठ तक आती है, यह नाम सबसे लम्बे स्वर में लिया जा सकता है इसके नाम से पूरे शरीर मे कम्पन का अनुभव होता है जिससे हमारे शरीर की सभी नस–नाड़ियां खुल जाती हैं। 'ओ३म्' के नाम को जपने से जो आनन्द आता है वह आनन्द अन्य नाम राम, कष्ण, शिव, ईश्वर, अल्लाह, गोड के नामों में नहीं आता। इसलिए ओ३म् का जाप करना ही उपयुक्त है। इसको किसी एक धर्म से जोड़कर साम्प्रदायिक नहीं बनाना चाहिए।

लाखों नहीं करोड़ों वर्ष तक इस पूरी धरती पर सिर्फ एक ही जाति 'आर्य' (श्रेष्ठ) थी और उनका उपास्य देव सिर्फ 'ओ३म्' ही था। वे ओ३म् की ही संध्या हवन व अष्टांग योग द्वारा उपासना करते हुए अपने मन, बुद्धि चित्त को एकाग्र करके समाधिस्थ होकर ईश्वर के सान्निध्य में बैठकर अपार आनन्द की अनुभूति करते थे। जिस प्रकार आंख का गुण रूप, नाक का गुण गन्ध, कान का गुण शब्द, जिह्वा का गुण स्वाद, त्वचा का गुण स्पर्श है, उसी प्रकार ईश्वर का गुण आनन्द है। को मानने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

सष्टि के आरम्भ से लेकर माहाभारत काल तक सारी धरती पर एक ही जाति 'आर्य' एक ही धर्म 'वैदिक' और उनका एक ही उपास्य देव 'ओ३म्' था। महाभारत के भयंकर युद्ध में विश्व के सभी वैदिक विद्वान् चिन्तक, योद्धा, व प्रबुद्ध लोग समाप्त हो जाने से विश्व में वैदिक धर्म मा प्रायः हास हो गया और स्वार्थी, अज्ञानी, अविद्वान ब्राह्मणों में परस्पर मतभेद होने से अपनी–अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए अलग–अलग मत, पंथ, व सम्प्रदाय स्थापित कर लिए जिससे विश्व में अनेकों मत–मतान्तर प्रचलित हो गए और उन्होंने अपने–अपने उपास्य देव भी अलग–अलग बना लिए। ईश्वर राम, कष्ण, अल्लाह, गोड आदि यह सभी उसी एक उपास्य देव 'ओ३म्' के ही भिन्न–भिन्न नाम हैं जो अज्ञान, अविद्या व परस्पर की फूट के कारण रखे हैं। यह स्वाभाविक है कि अलग–अलग मत और उपास्य देव होने से वे अपने ही मत को सबसे अच्छा बतलाकर परस्पर लड़ने झगड़ने लगे, और जो वैदिक काल में सारी पथ्वी को एक कुटुम्ब समझकर सब प्रेम पूर्वक रहते थे और सारा विश्व एक स्वर्गधाम था, उसे परस्पर के विरोध ने नर्क बना दिया।

ईश्वर की असीम कपा से उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ और उन्होंने अपने कठिन परिश्रम, तप व त्याग के बल पर वेदों का पुनः प्रकाश किया और विश्व को वैदिक धर्म की ओर लाने का अत्याधिक प्रयत्न किया और काफी सफलता भी मिली। महर्षि ने यह विचार करके कि मेरी मत्यु के बाद भी वैदिक धर्म का प्रचार होता रहे, इस उद्देश्य से सन् १८७५ में आर्यसमाज जो एक क्रान्तिकारी, परोपकारी व देश हितैषी संस्था है, उसकी स्थापना मुम्बई में की। उसी आर्यसमाज रूपी माता की कोख से अनेकों वैदिक विद्वान, देशभक्त,

– शेष पष्ठ ६ पर

आर्यसन्देश – तृतीय अंक : स्वास्थ्य चर्चा

योग भगाये रोगः

जीव का अन्तिम लक्ष्य है। यहां यह लिखना बहुत जरूरी है कि जैसे ईश्वर ने मनुष्य को आंख से देखने के लिए सूर्य, कान से सुन्ने के लिए आकाश, नाक से सूंघने के लिए पथ्वी, जिह्वा से चखने के लिए पानी और त्वचा से स्पर्श के लिए हवा बनाई है। उसी भांति बुद्धि के विकास के लिए वेदज्ञान दिया है। इस वेद ज्ञान द्वारा ईश्वर ने मनुष्य मात्र को यह शिक्षा व उपदेश दिया है कि तुमको अपने पूरे जीवन को कैसे व्यतीत करना है यानि तुमको क्या काम करने हैं और क्या काम नहीं करने हैं, जिससे तुम अपने पूरे जीवन में स्वयं सुखी रह सको और दूसरों को भी सुखी बना सको। साथ ही तुम्हारा अन्तिम लक्ष्य जो मुक्ति को प्राप्त करना है वह कैसे प्राप्त किया जा सकते है, यह बताया है और वेदों में ही ईश्वर ने मनुष्य मात्र को यह भी आदेश दिया है कि "ओ३म् क्रतो स्मर" हे जीव ओ३म् का स्मरण कर। ईश्वर ने यह आदेश अपनी स्तुति व प्रशंसा के लिए नहीं अपितु मनुष्यों की भलाई के लिए दिया। इससे मनुष्य के मन में आत्म सन्तुष्टि के साथ'साथ आत्मबल भी बढ़ता है और उसे अपने कतज्ञता भाव की पूर्ति की अनुभूति होती है जिससे उसके जीवन में नवशक्ति का संचार होता है। उस समय वेद ज्ञान यानि वैदिक धर्म के अतिरिक्त अन्य कोई ध ार्म, मत, पंथ व सम्प्रदाय नहीं थे। इसलिए वेद के आदेशानुसार हर स्त्री–पुरुषों को ओ३म् का जाप करना इसी की प्राप्ति के लिए मनुष्य 'ओ३म्' की उपासना करता है। इसीलिए वेदों के अधिकतर मन्त्रों के पहले 'ओ३म्' का प्रयोग किया गया है, जिससे 'ओ३म्' का पठन–पाठन बना रहे। दुःख इस बात का है कि हमने वेदों में आए अन्य ग्रह–उपग्रह पदार्थ व सम्बन्धों को उसी रूप में मानते हैं जैसा वेदों में वर्णित है। जैसे 'ओ३म् स्वस्ति पंथामनु चरेम् सूर्याचन्द्र मसाविव'। हम सूर्य, चन्द्रमा के समान निरन्तर कल्याणकारी मार्ग का अनुसरण करें। इसमें सूर्य और चन्द्रमा का वर्णन जैसा वेदों में है उसे आज भी उसी रूप में मानते हैं नाम चाहे किसे ने सूर्य का सन (Sun) और चन्द्रमा का मून (Moon) रख दिया हो। यदि हम उनसे पूछें तो वे इन्हें सूर्य और चन्द्रमा की ओर संकेत करेंगे। इसी प्रकार....

मां भ्राता भ्रबरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा। सम्यचः स्रताः भूत्या वाचं वदत भद्रया।।

अर्थात् भाई-भाई के साथ, बहिन-बहिन के साथ तथा भाई-बहिन के परस्पर द्वेष न करें। आपस में सदा ही सुखदायक कल्याणकारी वाणी बोलें। जैसे वेदों में आए सूर्य, चन्द्रमा बहन–भाई किसी एक धर्म, पंथ, सम्प्रदाय के नहीं हैं यानि सारे मानव मात्र के लिए वही सूर्य–चन्द्रमा व बहिन भाई हैं, तो फिर 'ओ३म्' सबके लिए क्यों नहीं? अर्थात् ओ३म् भी पूरे मानव के लिए है, जो वेदों में वर्णित है। अब किसी न उसका नाम ईश्वर, अल्लाह, खुदा, गौड रख लिया हो इससे 'ओ३म्'

(१) शीतली प्राणायाम से अनिद्रा, जीभ, मुँह, गले के रोग, गुल्म, प्लीहा, ज्वर,अजीर्ण, उच्च रक्तचाप एवं पित्त रोग ठीक होते हैं। रक्त भी शुद्ध होता है।

(२) चन्द्र भेदी प्राणायाम के लाभः अनिद्रा में विशेष लाभकारी है। इससे थकावट, उष्णता, पित्त के कारण होने वाली जलन आदि मिटती है।

(३) नाड़ी शोधनः इसके लाभ हैंः अनिद्रा का निवारण, समस्त नाड़ियों का शोधन, रक्त, शुद्धि और नेत्र-ज्योति की वद्धि। इससे फेफड़े शक्तिशाली बनते हैं, मन एकाग्र होता है, हदय की शिराओं में आए अवरोध (Blockager) खुलते हैं, संधिवात, गठिया, कंपवाल, स्नायु दुर्बलता, पित्त रोग, मूत्र रोग, धातुरोग, शुक्र रोग, अम्लपित्त, सर्दी-जुकाम, नजला, साइनस, अस्थमा, खांसी, टांसिल आदि सभी रोग मिटते हैं।

(४) कपालभाति प्राणायाम – से मिटता है–कब्ज और ठीक होते हैं अनेको रोग, जैसे दमा, साइनस, एलर्जी, हदय रोग, मधुमेह, मोटापा, गैस, अम्लपित्त, किडनी और प्रोस्टेट सम्बन्धी रोग आदि।

(५) प्राणायाम : भस्रिका प्राणायाम से त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) सम हो जाते हैं। कब्ज, मंदाग्नि, सर्दी, जुकाम, एलर्जी, श्वास रोग, दमा, पुराना नजला, साइनस आदि समस्त रोग मिटते हैं, रक्त परिशुद्ध होता है। मन शांत हो जाता है।

(६) अग्निसार क्रियाः से कब्ज, गैस, डकारें, अल्सर आदि रोग मिटते हैं। भूख बढ़ती है। पाचन सुधरता है।

(७) उड्डियान बंधः से पेट सम्बन्धी समस्त रोग दूर होते हैं। मणिपुर चक्र का शोधन होता है।

(८) मण्डूकासन – उदर रोगों में लाभकारी, हदय के लिए गुणकारी एवं मधुमेह रोग, के लिए विनाशकारी है।

(९) पवनमुक्तासन– वायु विकार के लिए उत्तम है। महिलाओं के लिए भी उपयोगी है। अल्पार्त्तव, कष्टार्त्तव व गर्भाशय सम्बन्धी विकारों में विशेष हितकारी है।

(१०) उत्तानपादासन – आंतों को सबल और निरोग बनाता है। इससे कब्ज, गैस, मोटापा, नाभि का टलना, पेट–दर्द, श्वांस रोग व हदय रोग में भी लाभ होता है।

(११) कब्ज की समस्या – पूर्णतया मिट जाती है, यदि आप निम्न आसनों का नियमित अभ्यास करेंः उत्तानपादासन, धनुरासन, चक्रासन, मत्स्यासन, भुंजगासन, पवनमुक्तसन, वज्रासन, मण्डूकासन, अर्धमत्स्येन्द्रासन और साथ करें अग्निसार, कपालभाति प्राणायाम और ब्राह्मकुम्भक।

(सभी यौगिक क्रियाएं सीखकर ही सावधानी पूर्वक करनी चाहिए। निःशुल्क योग प्रशिक्षण के लिए सम्पर्क सूत्र–०११–२२३७७२६७)

– सुभाष चन्द्र गुप्ता
१५६, ए.जी.सी.आर. एन्क्लेव
दिल्ली-११००९२

पृष्ठ 5 का शेष

बलिदानी, क्रान्तिकारी, महापुरुष पैदा हुए जिन्होंने देश को आजादी दिलाने में बड़ा सहयोग किया और विश्व को वैदिक धर्म की ओर ले जाने का भरसक प्रयत्न किया। उसी श्रृंखला में आज बाबा रामदेव जी हैं

जो हमारे ऋषि–मुनियों की जीवन शैली योग, आसन, प्राणायाम थी, जिसके बल पर मनुष्य कम से कम सौ वर्ष तक निरोग रहकर अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए जीवित रह सकता है, उसी जीवन शैली को हम भूल गए थे, पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगे जा रहे थे और अपने प्राचीन गौरव व स्वाभिमान को खो बैठे थे। उसे पुनः याद दिलाकर बाबा रामदेव जो गुरुकुलों द्वारा शिक्षित हैं उनको वेद शास्त्रों को तो पूरा ज्ञान ही है साथ ही योग, आसन, प्राणायाम पर पूरा अधिकार है। उन्होंने योग, आसन, प्राणायाम का वैदि कक्षाओं के साथ–साथ प्रदर्शन करना आरम्भ किया। इनके गुणों ओर लाभों को विश्व पटल पर प्रदर्शित किया जिससे सारी दुनिया इस ओर आकर्षित हुई और आज पूरा विश्व इसकी ओर दौड़ते हुए आता दिखाई दे रहा है। बाबा रामदेव उसी परमपिता परमात्मा का मुख्य और निजी नाम 'ओ३म्' को ही प्राणायाम करते समय श्वास, प्रश्वासों में जपने को कहते हैं जिससे मन एकाग्र हो जाने से प्राणायाम में लाभ अधिक पहुंचता है। इसलिए मेरा सभी मत–मतान्तरों के लोगों से करबद्ध निवेदन है कि वे अपने मन में 'ओ३म्' के उच्चारण के साथ–साथ प्राणायाम करें कारण ओ३म् किसी एक धर्म से बंधा हुआ नहीं है। यह सबका आराध्य देव है। १२ अक्तूबर को 'आस्था' चैनल से एक मुस्लिम भाई ने कहा कि बीमारी किसी धर्म से जुड़ी नहीं है, इसलिए ईलाज भी किसी धर्म से न जोड़कर सब को करना चाहिए। यह बात उस मुस्लिम भाई की अति प्रशंसनीय है। यही विचार प्रत्येक मुस्लिम व ईसाई व अन्य धर्म वालों को रखना चाहिए।

— १८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला), कोलकाता - ७००००७

आर्यसमाज डीसीएम रेलवे कालोनी, दिल्ली का ५२वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज डी०सी०एम० रेलवे कालोनी का ५२वां वार्षिकोत्सव आर्यनेता श्री कीर्तिशर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि वस्त्र, कर्मठता पुरस्कार स्वरूप प्रदान किए। उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान महाशय राम विलास खुराना, पूर्व डीसीपी चौ० चन्द्रभान, श्री ओम

आर्यसमाज निमोईया का ४६वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

बिहार प्रान्त के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र आर्यसमाज निमोईया, मोतिहारी (पूर्वी चम्पारण) में त्रिदिवसीय गायत्री महायज्ञ एवं ४६वां वार्षिकोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

२७ मई से २६ मई तक आयोजित हुए इस कार्यक्रम में पहुंचे हजारों लोगों को आर्यसमाज, दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश, गायत्री, पूजा-पाठ, धर्म, भारतीय संस्कति, संस्कार, प्राचीन गौरव, इतिहास, राजनीति, समाज सुधार, नारी शिक्षा, अंध विश्वास, कुरीतियां, गोरक्षा, मर्यादाओं, आदि से अवगत कराया गया। आगन्तुक विद्वान् आचार्य वेदश्रवा वर्णी (दिल्ली), श्री रामचन्द्र क्रान्तिकारी (नेपाल), कु० ऋचा योगमयी (खगडिया), श्री दयानन्द सत्यार्थी भजनोपदेशक (समस्तीपुर), श्रीमती अंजु सुमन आर्या (समस्तीपुर), श्री ध्रुवदेव शास्त्री (बेतिया), श्री सन्त एवं श्री प्यारे लाल आर्य ने क्षेत्रीय एवं मातभाषा में सम्बोधियात किया, जिससे अबाल, वद्ध महिला पुरुष प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके।

इस अवसर पर अनेक लोगों ने अभक्ष्य मांसाहार आदि त्यागने हेतु यज्ञोपवीत धारण कर व्रत लिया।

— आचार्य दीपनारायण शास्त्री

निःशुल्क क्रियात्मक वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर

यज्ञ योग साधन केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला– झज्जर (हरयाणा) में निःशुल्क क्रियात्मक वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोन **२३ जून से २६ जून, २००८** तक स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक की अध्यक्षता में आयोजित किया जा रहा है। शिविर में १५ वर्ष तक की आयु से लेकर वद्ध स्त्री–पुरुष तक भाग ले सकते हैं। शिविर उद्घाटन २३ जून, २००८ को सायं ४ बजे होगा। भोजन एवं आवास का प्रबन्ध आश्रम की ओर से निःशुल्क

महर्षि दयानन्द दिव्य संदेश का प्रकाशन

समस्त आर्यजनों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज, बी–६६, सैक्टर–३३, नोएडा का मुख पत्र "महर्षि दयानन्द दिव्य सन्देश" (द्विमासिक पत्र) का प्रकाशन पुनः आरम्भ किया जा रहा है। जिसे किसी कारणवश बीच में रोक देना पड़ा था, जिसमें सत्य एवं ज्ञान से भरपूर, योग, स्वास्थ्य सम्बन्धी, यज्ञ, धर्म, समाज सुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, सदाचार, संस्कार, नैतिकता, वैदिक विचार, शिक्षा इत्यादि पर सारगर्भित लेख पढ़ने को मिलेंगे। सभी से सविनय निवेदन है कि सहयोग

आर्यनेत्री माता शीला ग्रोवर ने इस अवसर पर आर्यसमाज दिल्ली क्लाथ मिल रेलवे कालोनी व समीपवर्ती क्षेत्रों के युवक युवतियों को नवीन प्रकाश नरुला, श्री महिपाल आर्य, आचार्य सुखदेव तपस्वी, श्री अमरनाथ गोगिया व क्षेत्रीय आर्यसमाजों के युवकों का सहयोग रहा। इस अवसर पर प्रीतिभोज का भी आयोजन हुआ। कुशल प्रबन्ध में मन्त्री श्री रणधीर आर्य, रामबाबू जैन व आचार्य रामेश्वर की सराहनीय भूमिका रही। स्व० श्री सुरेश ग्रोवर जन्मोत्सव पर २८ मई, को करोलबाग आर्यसमाज में भी सत्संग व विशाल लंगर सम्पन्न हुआ।

— चन्द्रमोहन आर्य, प्रैस सचिव

निर्वाचन समचार

आर्य समाज अमर कालोनी
लाजपत नगर-४, नई दिल्ली

प्रधान : श्री जितेन्द्र कुमार डाबर
मन्त्री : श्री ओम प्रकाश छाबड़ा
कोषाध्यक्षः श्री सुभाष चन्द्र आर्य

आर्य समाज गोविन्दपुरी
नई दिल्ली-१६

प्रधान : श्री सोमदेव मल्होत्रा
मन्त्री : श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता
कोषाध्यक्षः श्री टेकचन्द कथूरिया

आर्य समाज कर्मपुरा
जी ब्लाक, नई दिल्ली-१५

प्रधान : श्री आदर्श कुमार शर्मा
मन्त्री : श्री दिनेश पाल सिंह
कोषाध्यक्षः श्री राजेन्द्र सिंह

आर्य समाज ग्रीन पार्क
नई दिल्ली-११००१६

प्रधान : श्री विद्यामित्र ठुकराल
मन्त्री : श्रीमती प्रभुशरणिता
कोषाध्यक्षः श्री आदर्श कपूर

आर्य समाज निमोईया
मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण (बिहार)

प्रधान : पं० सत्यानन्द द्विवेदी
मन्त्री : आर्य शिवगोविन्द यादव
कोषाध्यक्षः आर्य रामेश्वर ठाकुर

आपके पत्र

आदरणीय सम्पादक जी,

साप्ताहिक 'आर्यसन्देश'

आपने श्रीमद् दयानन्द प्रकाश' क्रमशः अपने साप्ताहिक में उद्धृत करके बड़ा सराहनीय कार्य किया है, जिसके लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं। स्वर्गीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज मूलतः कवि थे और उन्होंने सरल, सरस एवं काव्यमयी भाषा में ऋषि दयानन्द जी का जीवन चरित्र लिखा। जब स्वामी जी ने यह अनमोल ग्रंथ लिखा तब वह वैदिक धर्म तथा दयानन्द के प्रति पूर्णतया समर्पित थे। उनका श्रीमद् भगवत् गीता, एकादश उपनिषद्, रामायण आदि ग्रन्थों के अनुवाद पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। ***— देवेन्द्र गुप्ता***

३४२, बक्शी नगर, गुरुद्वारा रोड, जम्मू- १८०००१ (ज०क०)

होगा। अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर शिविर को सफल बनाएं तथा स्वास्थ्य एवं धर्मलाभ प्राप्त करें।

— स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी, अधिष्ठाता
सत्यानन्द आर्य, प्रधान, ट्रस्ट

बनाए रखें। लेखक कपया अपने सारगर्भित लेख शीघ्र भिजवाने की कपा करें, ताकि समय पर पाठकों को सामग्री प्राप्त हो सके।

— कै० अशोक गुलाटी, प्रबन्ध सम्पादक

आर्यवीर दल पूर्वी उ०प्र० द्वारा

शाखानायक स्तरीय प्रशिक्षण शिविर

१६ जून से २५ जून, २००८

स्थान : भारतीय शिक्षा मन्दिर, इंगलिशिया लाइन कैन्ट, (रेलवे स्टेशन के निकट), वाराणसी (उ०प्र०)

शिविर में भाग लेने वाले आर्यवीर काला कच्छा, सैण्डो गंजी, सफेद मोजा एवं पीटी शू साथ में मौसमी बिस्तर थाली, लोटा, गिलास, पेन, कापी, टार्च, लाठी व यज्ञ की पुस्तक अवश्य लाएं तथा आर्यसमाज या आर्यवीर दल के पदाधिकारी का संस्तुति पत्र साथ लावें। सभी शिविरार्थी १८ जून, को रात्रि ८ बजे शिविर स्थल पर उपस्थित हो जावें। **शिविर शुल्क १००रुपये प्रति शिविरार्थी होगा।** शिविर के अन्तिम तीन दिनों में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक स्वामी देवव्रत सरस्वती जी भी भाग लेंगे।

— दिनेश आर्य, प्रमोद आर्य, शिविर संयोजक

शोक समाचार

स्वामी नित्यानन्द जी का निधन

आर्यजगत् के विद्वान संन्यासी पूज्य श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज का २१ मई, २००८ को देहावसान हो गया। वे ८१ वर्ष के थे। तपःपूत निस्पह संन्यासी अहर्निश आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार में संलग्न रहे तथा विशेषकर आगरा मंडल के विभिन्न ग्रामों में पिछले ४० वर्षों से विविध प्रकार के यज्ञों व उत्सवों का आयोजन करके आर्यसमाज की विचारधारा तथा वेदज्ञान को लोगों तक पहुंचाने का प्रशंसनीय कार्य किया। उनके निधन से आर्यसमाज की अपूर्णीय क्षति हुई है, जिसकी पूति हो पाना कठिन है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं हम सबको यह दुख सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। — सम्पादक

ईश्वर के स्वरूप के ज्ञान से मत्यु भय से मुक्ति

रविवार दिनांक १ जून, २००८ को आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली में अथर्ववेद के 'अकामो ध ीरो ....' मन्त्र की व्याख्या करते हुए युवा वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ० अरुणदेव शर्मा ने कहा कि वह ईश्वर कामनाओं से रहित है, धीरवीर और विद्वान् है, अमत है अर्थात् जन्म—मरण के बन्धनों से मुक्त है, स्वयंभू है वह सर्वतन्त्र स्वतन्त्र है और अपने सभी कार्य स्वयं करता है, स्वप्रकाशस्वरूप है और उसे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है। वह परमेश्वर आनन्द से परिपूर्ण है। वह आत्माओं की भी आत्मा है अर्थात् जड़—चेतन का स्वामी है, अजर—अमर है और चिर युवा है। जो विद्वान् उसके इस स्वरूप को जान लेते हैं वे मत्यु भय से मुक्त हो जाते हैं, ऐसे ज्ञानी पुरुष आत्म—बलिदान से नहीं हिचकते और वे धर्म, जाति और राष्ट्र पर हंसते—हंसते प्राणों की बलि चढ़ा देते हैं तथा अमर हो जाते हैं। ऐसे महापुरुषों में महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

आचार्य श्री के प्रति धन्यवाद व्यक्त करते हुए आर्यसमाज के प्रधान डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया ने कहा कि ईश्वर के अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव एवं नामों में से यहां उसकी कुछ विशेषताओं की चर्चा की गई। इन शुभ गुणों को जानने का वास्तविक अर्थ हैं — इन्हें मानना और इनको ग्रहण करना। हम भी ईश्वर के समान सांसारिक कामनाओं से रहित होकर मोह का त्याग करें, धीर—वीर बनें, अमतत्व की प्राप्ति की चेष्टा करें तथा इसी प्रकार ईश्वर के विभिन्न गुणों को धारण करते हुए उत्साहपूर्वक शुभ कार्यों को सम्पन्न करें। डॉ० कथूरिया ने कहा कि मत्यु से भयानक है मत्यु भय। इस भय निवत्ति के यर्थाथ ज्ञान से ही सम्भव है।

— श्री कष्णलाल कुमार
कार्यकारी मन्त्री

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव

राजस्थान के अलवर जिले में स्थित आर्ष गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव दिनांक **२६ से २८ सितम्बर, २००८** को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। आर्यजनता से प्रार्थना है कि समारोह की तिथि को अंकित करने की कपा करें और पहले की तरह इस वर्ष भी अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम

३६५ दिन में १२५० यज्ञ आयोजन का कीर्तिमान

टंकारा (गुजरात) स्थित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय के ब्रह्मचारी जिन्हें उपदेशक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत् वेद प्रचार एवं यज्ञ आदि के कार्यक्रमों में भेजा जाता है, जिससे कि वे उन्हें सिखाया गया है, उसमें निपुण हो सकें। इस प्रक्रिया में ब्रह्मचारियों ने एक वर्ष में १००० यज्ञ एवं अन्य संस्कार करने का प्रण लिया; परन्तु उनका उत्साह इतना अधिक था कि ३६५ दिन पूर्ण होने पर जब उनके द्वारा किए गए यज्ञ, हवन, संस्कारों की समीक्षा की गई, तो संख्या में वे १२५० थे, जाकि अपने आप मे एक कीर्तिमान है। *— रामनाथ सहगल, मन्त्री*

त्रिदिवसीय सत्यार्थ प्रकाश प्रशिक्षण शिविर

१३ जून से १५ जून, २००८

स्थान : माता लीलावन्ती सभागार, नवलखा महल, उदयपुर (राज०)

आवास, भ्रमण, भोजन व्यवस्था निःशुल्क, सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता के विजेताओं को मार्गव्यय भी।

'तुरन्त सम्पर्क करें'

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर - ३१३००१ (राजस्थान)
फोनः २४१७६६४,
मो. ६३१४२३५१०१, ९८२९०६३११०
ईमेल - satyarthnyas@rediffmail.com

आर्यसमाज सागरपुर, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में

एक शाम ऋषि के नाम कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज सागरपुर, नई दिल्ली में दिनांक ३ जून, २००८ को सायं ६ बजे से ६.३० बजे तक 'एक शाम ऋषि के नाम' कार्यक्रम भव्य एवं समारोह पूर्वक मनाया गया। आचार्य नरेन्द्र पाल जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ श्री देवेन्द्र शास्त्री जी के भजन एवं श्री हरिदत्त जी शास्त्री के प्रवचन हुए। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय काफी संख्या में शामिल हुए। जिनमें मुख्य रूप से सर्वश्री जनकराज सेठी, विक्रम नरुला, वीरेन्द्र सदाना, हर्ष स्वरूप शर्मा, आर. पी. शर्मा, रत्न सिंह त्यागी, महेन्द्र सिंह, रामेश्वर गुप्ता तथा क्षेत्रीय नेता श्री बाबू राम राजपूत, श्री प्रद्युम्न राजपूत, श्री सुरेश यादव, श्री सुरेन्द्र पाल सिंह आदि उपस्थित हुए। समारोह की अध्यक्षता

की शोभा बढ़ाएं। २८ सितम्बर, २००८ को प्रातः १० बजे यज्ञ की पूर्णाहुति होगी, इसके बाद दोपहर १ बजे तक स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में सार्वजनिक सभा का आयोजन भी होगा। — ***प्राचार्या***

'खतरे की घंटी' पुस्तक का विमोचन

नई दिल्ली के लाजपत नगर स्थित मीरपुर बलिदान भवन मे राष्ट्रवाद की प्रखरनेत्री, दिल्ली की पूर्व महापौर श्रीमती शकुन्तला आर्या की सद्यः पुस्तक खतरे की घंटी का लोकार्पण किया गया। सभा की अध्यक्षता गोवा के पूर्व राज्यपाल श्री केदारनाथ साहनी ने की।

इस अवसर पर सांसद श्री विजय कुमार मल्होत्रा, जम्मू—कश्मीर के पूर्व राज्यपाल श्री जगमोहन, सुशील मुनि मैमोरियल ट्रस्ट की डॉ० साधना आदि ने अपने उद्बोधनों में राष्ट्रविरोधी खतरों का उल्लेख करते हुए श्रीमती शकुन्ताल आर्या के लेखन की भूरि—भूरि प्रशंसा की।

अन्त में श्रीमती शकुन्तला आर्या ने पुस्तक की विषय वस्तु, ईसाई प्रचार की अधी, जन सांख्यिक संकट, इस्लामी आतंकवाद, आतंकवाद की भड़कती ज्वालाएं और विकत धर्मनिपेक्षता से भारतीय संस्कति पर होने वाले संकटों का विश्लेषण करते हुए भविष्य की भयावह तस्वीर प्रस्तुत की और सबको आगह करते हुए कहा कि इन खतरों से जूझते हुए हमें इनके पार निकलना है ताकि हम सब सुखी और संम्पन्न भारत का नव निर्माण कर सकें।

— ***शकुन्तला नांगिया, महामन्त्री, आर्य प्रकाशन समिति***

व्यक्तित्त्व विकास शिविर

डॉ० देवशर्मा वेदालंकार जी के सान्निध्य में सम्पूर्ण परिवार के विकास के लिए योगाभ्यास, प्रवचन, मार्गदर्शन एवं शंका समाधान के माध्यम से एक अनूठे शिविर का आयोजन दिनांक **२३-२४-२५ जून, २००८** को झंग भवन, ऋषिकेश हरिद्वार रोड, भूपतवाला चौक, जैन मन्दिर के समीप हरिद्वार, दूरभाष :— ०१३३४२६१६५६ में किया जा रहा है। **पाठ्यक्रम** : १. शरीर की शिक्षा, २. मन की शिक्षा, ३ गहस्थ जीवन को सरस, सफल और खुशहाल बनाने के सात स्वर्णिम कदम।

सहयोग राशि : ५००/- रुपये आवास एवं भोजन सहित।

— ***सतपाल कालरा, व्यवस्था सहयोग ९८११२१११५३***

डॉ० राजीव गोयल, संयोजक ०११-२०३६७५२३, ९८१०६६६८६५

आर्य ने प्रेरणादायक उद्बोधन देते हुए उत्साहवर्धक जनसमूह तथा इतना सुन्दर भव्य व सफल आयोजन के

लिए समाज के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं को बधाई दी। समारोह में आस-पास के विभिन्न समाजों के पदाधिकारी, सदस्यगण तथा क्षेत्रीय नागरिक

श्री रामजीलाला आर्य ने तथा संयोजन श्री सुखबीर सिंह आर्य ने किया। आशीर्वाद स्वामी यज्ञमुनि वानप्रस्थी ने दिया। समाज की प्रधाना श्रीमती विद्यावती आर्य ने सभी का धन्यवाद किया। अन्त में ऋषिलंगर के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

— ***हरिसिंह, उप प्रधान***

समर्पण शोध संस्थान, साहिबाबाद के संस्थापक विद्यामार्तण्ड स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती का

जन्मदिवस समारोह

रविवार : १५ जून, २००८ स्थान : ४/४२, सै०-५, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद

यज्ञ : प्रातः ८ से ९ बजे ब्रह्मा : डॉ० धर्मेन्द्र शास्त्री

अध्यक्षता : स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

निवेदक : श्रद्धानन्द शर्मा (प्रधान) *राजेन्द्र भटनागर (मन्त्री)*

साप्तहिक आर्य सन्देश
9 जून, 2008 से 15 जून, 2008
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि. नं० डी.एल. (एन.डी.) - ११/६०७१/२००६-२००८
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक १२/१३–०६–२००८
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३६/२००६-०८
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

आर्यवीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में
चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश का वार्षिक चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षण प्रशिक्षण शिविर–२००८ पूर्वी दिल्ली के दयानन्द मॉडल स्कूल, विवेक विहार, दिल्ली में १८ से २५ मई, २००८ तक आयोजित किया गया जिसका विधिवत उद्घाटन ध्वजारोहण के माध्यम से श्रीमती सीमा भाटिया जी द्वारा किया गया। दिल्ली के अलग-अलग क्षेत्रों से आई लगभग १०० वीरांगनाएं पूर्ण गणवेश में उपस्थित थीं। सभी वीरांगनाओं को एक सप्ताह तक चलने वाले इस शिविर की रूपरेखा से अवगत कराया गया। ब्र० सुमेधा आर्या द्वारा सभी वीरांगनाओं का यज्ञोपवीत संस्कार करा उन्हें अपनी वैदिक संस्कति से परिचित कराया गया। विभिन्न विद्वानों ने बालिकाओं के बौद्धिक विकास एवं चरित्र निर्माण हेतु विभिन्न कार्यशाओं का आयोजन किया। कुशल शिक्षिकाओं द्वारा योगासन, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, आत्मरक्षण प्रशिक्षण जैसे नियुद्धम, लाठी, छुरी, तलवार आदि का सुन्दर प्रशिक्षण दिया गया, जिसे वीरांगनाओं ने बड़े उत्साहपूर्वक सीखा। प्रतिदिन दैनिक यज्ञ की सुन्दर व्यवस्था स्वामी उत्तम यति, श्रीमती कष्णा ठुकराल, आचार्य देवव्रत, श्री वीरेन्द्र आर्य, श्री बहस्पति आर्य, श्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य आदि मंच पर उपस्थित थे, जिन्होंने अपने उद्बोधन द्वारा सभी वीरांगनाओं का मार्ग प्रशस्त किया। हॉलैंड से पधारे श्री शैलेष एवं श्री श्रुति बीरे का उत्साह देखते ही बनता था। सभी विभिन्न परीक्षाओं में प्रथम एवं द्वितीय आने वाली एवं अन्य सभी वीरांगनाओं को भी अन्त में सुन्दर पुरस्कारों से पुरस्कत किया गया। सभी पुरस्कारों की सुन्दर व्यवस्था जे०बी० एम० ग्रुप द्वारा की गई। महाशय धर्मपाल जी ने सभी वीरांगनाओं एवं शिक्षिकाओं हेतु पुरस्कारों की घोषणा की।

इस कार्यक्रम में दयानन्द मॉडल स्कूल के प्रबन्धक श्री विशम्भर दास भाटिया जी, श्री प्रवीण भाटिया, प्रि. आशा अस्थाना एवं सारे स्टाफ के विशेष सहयोग हेतु दल की ओर से एक स्मति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। श्रीमती उषा किरण कथूरिया जी का योगदान सराहनीय रहा। श्रीमती वीणा आार्या जी के कुशल संचालन में यह शिविर पूर्ण सफल रहा। श्रीमती शारदा आर्या, श्रीमती पुष्पा आर्या, श्रीमती

प्रथम पृष्ठ का शेष

www.satyarthprakash.com
इस वैब साईट के माध्यम से स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश को भारत व विश्व की 22 भाषाओं में पढ़ी जा सकती है। वर्तमान सत्यार्थ प्रकाश 7 भाषाओं में उपलब्ध हो चुके हैं तथा साथ ही बाल सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी व अंग्रेजी में भी पढ़ी जा सकती है।

www.swamidayanand.org : स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जीवन की प्रमुख घटनाओं का सचित्र वर्णन इस वेब साईट पर उपलब्ध है तथा उनके जीवन वृत्त, उनके द्वारा लिखित ग्रंथावली, अमृत वचन, शिष्यावली और स्वामी जी के विभिन्न चित्रावली को आप देख व डाउनलोड कर सुरक्षित रख सकतें हैं।

www.aryaveerdal.org : आर्य वीर दल, आर्यसमाज के नौजवानों का एक संगठन है। इस वेब साईट के माध्यम से आर्य वीर दल के इतिहास, मिशन, शाखा, उसके सदस्यों द्वारा किये गये कार्यो को चित्र सहित देख व पढ़ सकतें हैं। ❑

डच भाषा में सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन सम्पन्न
स्पेनिश, जर्मन तथा ब्रेल लिपि में जल्द होगा प्रकाशन

गत वर्ष सम्पन्न हुए अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर प्रतिवर्ष एक विदेशी भाषा में महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को प्रकाशितन करने की योजना की घोषणा की गई थी। इस योजना को क्रियान्वित करते हुए **डच** में सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन सम्पन्न हो चुका है। इसके साथ–साथ **स्पेनिश** में अनुवाद का कार्य प्रारम्भ हो गया है। **जर्मन** संस्करण पुनः प्रकाशन के लिए कम्पोजिंग कार्य चल रहा है। नेत्रहीनों को भी आर्यसमाज की विचारधारा से जोड़ने तथा उनको महर्षि दयानन्द की अमर कति सत्यार्थ प्रकाश उपलब्ध कराने के लिए **ब्रेल लिपि** में प्रकाशन की कराने की तैयारियां की जा रही हैं।

– विनय आर्य, महामन्त्री

अलग–अलग वर्गों की बालिकाओं द्वारा की जाती थी और सभी को यज्ञ का भी सुन्दर प्रशिक्षण दिया गया एवं शंकाओं का निवारण भी किया गया। संध्या एवं यज्ञ के मन्त्रों का शुद्ध पाठ भी सिखाया गया। सभी प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त कर अन्तिम दिन परीक्षाएं आयोजित की गई। उन्हीं परीक्षाओं के आधार पर पूरे शिविर में प्रथम आने पर कनिष्ठ वर्ग में सर्वश्रेष्ठ आर्य वीरांगना का पुरस्कार कु० दिव्या भाटिया एवं वरिष्ठ वर्ग में कु० पूनम राणा को दिया गया। २५ मई को प्रातः १० बजे से शिविर समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसका ध्वजारोहण महाशय धर्मपाल जी (एम. डी.एच.), श्री मुंशीराम सेठी (फ्रंटीयर बिस्कुट) के कर-कमलों द्वारा किया गया। आचार्य देवव्रत जी, प्रधान संचालक एवं महाशय धर्मपाल जी ने आर्य वीरांगना दल का निरीक्षण किया। तत्पश्चात् दल ने पथ संचालन (परेड़) द्वारा सभी अतिथियों का नमनकर (सलामी देकर) स्वागत किया। इस अवसर पर सभी वीरांगनाओं ने शिविर प्राप्त प्रशिक्षण जैसे सर्वांगसुन्दर व्यायाम, योगासन, नियुद्धम, लाठी, तलवार, छुरी आदि का भव्य प्रदर्शन कर सभी अतिथियों व अभिभावकों का मन मोह लिया। वीरांगनाओं को आशीर्वाद देने हेतु श्री मुंशीराम सेठी, विभा आर्या, श्रीमती सीमा आर्या, श्रीमती स्नेह भाटिया जी ने एक सप्ताह का पूरा समय देकर इस शिविर को सफल बनाने में अपना पूरा-पूरा योगदान किदया। डॉ० सुनीति आर्या ने भी यथासम्भव योगदान दिया। कु० मनीषा आर्या, कु० श्रुति आर्या, कु० संगीता आर्या, कु० लिपिका, कु० हविषा व कु० वर्णिका आर्या आदि शिक्षिकाओं ने पूर्ण निष्ठापूर्वक शिविर में प्रशिक्षण प्रदान किया।

— विभा आर्या, मन्त्री

वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली एवं आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी, नई दिल्ली के तत्वावधान में

सर्वरोग निवारण योग एवं साधना शिविर

आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी के सामने वाले पार्क (दयानन्द वाटिका) में स्वामी श्रयोनन्द के सान्निध्य में दिनांक १६ से २२ जून, २००८ तक प्रतिदिन प्रातः ५.३० से ७.०० बजे तक आयोजित किया जा रहा है।

आप सभी अधिकाधिक संख्या में पधारकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें।

— सुरेन्द्र बुद्धिराजा, प्रधान
वीरेन्द्र सरदाना, महामन्त्री

सार्वदेशिक सभा एकता प्रकरण मुद्दा

साप्ताहिक आर्यसन्देश के दिनांक २६ मई से १ जून, २००८ के अंक में सार्वदेशिक सभा के एकीकरण के सम्बन्ध में दिल्ली हाई कोर्ट द्वारा दिए जाने वाले आर्डर के मुख्य बिन्दु प्रकाशित किए गए थे, किन्तु सभा कार्यालय को लगतार इस केस की जानकारी के लिए ईमेल एवं फोन प्राप्त हो रहे हैं। फोन से सभी को केस की जानकारी देना सम्भव नहीं है। यह आर्डर श्री विमल वधावन एवं श्री रामफल बंसल के अड़ियल रूख तथा अपनी पूर्व में कोर्ट में कही गई बातों से पलटने के कारण जारी नहीं हो सका था। अतएव उस केस में दिए जाने वाले प्रस्तावित आडर्र के मुख्य बिन्दु यहां दिए जा रहे हैं। यह आर्डर सभी तीनों पक्षों को मंगलवार २७ मई, २००८ को पढ़वा दिया था तथा इसे बुधवार २८ मई, २००८ को दिया जाना था।

प्रस्तावित आर्डर के ऐतिहासिक और उपयोगी मुख्य बिन्दु

१. कोर्ट द्वारा एक तीन सदस्यीय समिति का निर्माण किया जाएगा। जिसमें एक हाई कोर्ट के रिटायर्ड माननीय न्यायाधीश जस्टिस सहारिया, दूसरे भारतीय निर्वाचन आयोग के अवकाश प्राप्त सचिव श्री एस० के० मैंदीरत्ता, तीसरे स्वामी सुमेधानन्द जी होंगे।

२. यह समिति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नियमो–उपनियमों के अनुसार प्रान्तीय सभाओं से प्रतिनिधि बुलाकर निर्वाचन नामावली (इलेक्ट्रोल रोल) तैयार करेगी।

३. यह समिति ३१ दिसम्बर, २००८ से पहले चुनाव सम्पन्न कराएगी। समिति अपना समस्त कार्य ३/५ आसफ अली रोड के प्रधान कार्यालय से संचालित करेगी।

४. समिति के समस्त खर्चे इत्यादि के लिए सभी तीनो ही पक्षों के लिए कुछ–न–कुछ राशि देय होगी।

५. नए चुनावों के हो जाने तक किसी भी विवाद को कोर्ट में नहीं सुना जाएगा, ताकि यह प्रक्रिया न तो रूके और न ही उलझे।

६. यदि इस कार्य के दौरान समिति को विशेष समस्याओं का सामना करना पड़ता है तो उसके लिए वे हाई कोर्ट से इस बारे में निर्देश ले सकते हैं।

७. चुनाव के सम्पन्न हो जाने तक सभी पक्ष यथा स्थिति को बरकरार रखेंगे।

— विनय आर्य, उपमन्त्री, सार्वदेशिक सभा

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली– २ से छपवाकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; फैक्स २३३६५६५६; E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : **ब्र० राजसिंह आर्य** सह सम्पादक : **विनय आर्य** व्यवस्थापक : **सुशील महाजन** सह व्यवस्थापक : **डॉ० ओमप्रकाश भटनागर**